कमला (Kamala Ekadashi) (पद्मिनी) एकादशी व्रत कथा :

कुंती पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से कहते हैं - हे जनार्दन! अधिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? तथा उसकी विधि क्या है? कृपा कर आप मुझे बताइए ।

श्रीकृष्ण भगवान बोले हे राजन्- अधिक मास में शुक्ल पक्ष में जो एकादशी आती है वह पद्मिनी (कमला) एकादशी कहलाती है । वैसे तो प्रत्येक वर्ष 24 एकादशियाँ ही होती हैं । किन्तु जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 26 हो जाती है ।

अधिकमास में दो एकादशी होती है, जो कि पद्मिनी एकादशी (शुक्ल पक्ष) और परमा एकादशी (कृष्ण पक्ष) के नाम से जानी जाती है । भगवान श्रीकृष्ण ने इस व्रत की नियम बताते हुए कहा :

मलमास में अनेकों पुण्यों को देने वाली एकादशी का नाम पद्मिनी (कमला) है । इसका व्रत करने पर मनुष्य कीर्ति प्राप्त कर के बैकुंठ को जाता है । जो मनुष्यों के लिए भी दुर्लभ है ।

ये एकादशी करने के लिए दशमी के दिन व्रत का आरंभ कर के काँसी के पात्र में जौं-चावल आदि का भोजन करें तथा नमक न खावें । भूमि पर ही सोएं और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें । एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में शौच आदि से निवृत्त होकर दन्तधावन करें और जल के बारह कुल्ले करके शुद्ध हो जाए ।

सूर्य उदय होने के पूर्व उत्तम तीर्थ में स्नान करने को जाए । इसमें गोबर, मिट्टी, तिल तथा कुशा व आँवले के चूर्ण से विधिपूर्वक स्नान करें । श्वेत वस्त्र धारण कर के भगवान श्री हरि विष्णु जी के मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना करें ।

भगवान श्रीकृष्ण ने इस व्रत की कथा बताते हुए कहा :

भगवान कृष्ण बोले- पूर्वकाल में त्रेया युग में हैहय नामक राजा के वंश में कृतवीर्य नाम का राजा महिष्मती पुरी में राज्य करता था । उस राजा की एक हजार परम प्रिय स्त्रियाँ थीं, परंतु उनमें से किसी को भी पुत्र नहीं था, जो उनके राज्य भार को संभाल सकें । देवता, पितृ, सिद्ध तथा अनेक चिकित्सकों आदि से राजा ने पुत्र प्राप्ति के लिए काफी प्रयत्न किए लेकिन सब असफल रहे ।

एक दिन राजा को वन में तपस्या के लिए जाते थे उनकी परम प्रिय रानी इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए राजा हरिश्चंद्र की पद्मिनी नाम वाली कन्या राजा के साथ वन जाने को तैयार हो गई । दोनों ने अपने अंग के सब सुंदर वस्त्र और आभूषणों का त्याग कर वल्कल वस्त्र धारण कर गन्धमादन पर्वत पर गए ।

राजा ने उस पर्वत पर दस हजार वर्ष तक तप किया परंतु फिर भी पुत्र प्राप्ति नहीं हुई । तब पतिव्रता रानी कमलनयनी पद्मिनी से अनुसूया ने कहा- बारह मास से अधिक महत्वपूर्ण मलमास होता है, जो बत्तीस मास पश्चात ही आता है । उसमें द्वादशीयुक्त पद्मिनी शुक्ल पक्ष की एकादशी का जागरण समेत व्रत करने से तुम्हारी सारी मनोकामना पूर्ण हो जाएगी । इस व्रत करने से पुत्र देने वाले भगवान तुम पर प्रसन्न होकर तुम्हें शीघ्र ही एक सुन्दर पुत्र देंगे ।

रानी पद्मिनी ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से एकादशी का व्रत किया । वह एकादशी को निराहार रह कर रात्रि जागरण कर इस व्रत को किया । उसकी निष्ठा और इस व्रत से प्रसन्न होकर भगवान श्री हरि विष्णु ने उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दे दिया । इसी के प्रभाव से पद्मिनी के घर कार्तिवीर्य उत्पन्न हुए । जो बलवान थे और उनके समान तीनों लोकों में कोई बलवान नहीं था । तीनों लोकों में भगवान के सिवा उनको जीतने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं था ।

सो हे कुंती पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर ! जिन मनुष्यों ने मलमास शुक्ल पक्ष एकादशी का व्रत किया है, जो संपूर्ण कथा को पढ़ते या सुनते हैं, वे भी यश के भागी होकर बैकुंठ लोक को प्राप्त होते है ।

pujakatha.com